टैगोर के राष्ट्रवादी विचारों का अवलोकनः 'होम एंड द वर्ल्ड' और 'गोरा' के संदर्भ में

प्रियंका शर्मा

ऐतिहासिक रूप से ''राष्ट्रवाद'' की समझ को लेकर रवीन्द्रनाथ टैगोर एक ऐसा नाम है जिन्होंने राष्ट्रवाद को पुर्णयत् भिन्न वैचारिक दृष्टिकोण के तहत परिभाषित किया। जिसे समझने के सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्त्रोत उनके द्वारा स्वयं रचित उपन्यास है जो कि ना केवल राष्ट्रवाद की एक पुर्णयत् भिन्न परिभाषा पेश करते है बल्कि इनसे उस औपनिवेशिक दौर के बंगाली भद्रलोक समाज, जातिय सरचंना, लिंग आधारित सोच तथा मौजूद वैचारिक भिन्नता का भी पता चलता है। जिससे इन सभी पक्षो के सन्दर्भ मे तथा टेगौर के विचारो से राष्ट्रवाद क्या है? इसके द्वारा रचित इनकी दो ऐतिहासिक उपन्यास गौरा (1910) व घरे-बाहिरे (1916) को यदि देखे तो इनमें एक प्रकार का वैचारिक सघर्ष तो देखने को मिलता ही है साथ इनके अध्ययन से पता चलता है कि जो प्रमाण टैगोर द्वारा इन लेखनों मे उपलब्ध कराए गए है वह राष्ट्रवाद को लेकर उनकी स्वयं की समझ के साथ-साथ उनकी व्यक्तिगत विशेषताओ को भी उजागर करती है।

सर्वप्रथम गौरा उपन्यास की और ध्यान आकर्षित करे तो इसमे गौरा नामक जो चरित्र दर्शाया गया वो व्यक्तिगत रूप से टैगोर ने इतना प्रभावशाली वर्णित किया कि उसके राष्ट्रवाद संबंधी मौखिक विचारों से कोई भी व्यक्ति बहुत सरलता से प्रभावित हो सकता है। जिससे गौरा के राष्ट्र तथा राष्ट्रवाद को लेकर मौजुद विचारो को यदि देखे तो एक तरफ जहां उसमे राष्ट्र के प्रति एकता, त्याग तथा समग्रता का भाव पोषित है वही दूसरी ही और धर्म तथा समुदायो की परम्परागत बेड़ियों से वह इस प्रकार सकुंचित किया गया है कि वह राष्ट्र में आंतरिक रूप से मौजुद समस्याओं जैसे जाति कठोरता व सामाजिक स्तरीकरण के समाधानो को वह आवश्यक नही मानता अर्थात् गौरा के लिए यह स्वाभाविक तथा महत्वकारी पक्ष है। साथ ही गौरा का स्वदेश के प्रति प्रेम तथा अपने विचारो को प्रकट करने की मौखिक शक्ति इतनी बेजोड़ है कि वह इस गुण मे सक्षम है कि वो परिस्थिति विशेष अनुसार अपने राष्ट्रवादी विचारो को उपयुक्त साचे के आकरा मे बैठा सके।

वही गौरा से भिन्न अन्य महत्वपूर्ण चरित्र उसका मित्र विनय की अवस्था टैगोर द्वारा इस रूप मे वर्णित की गई। जिसमें वह गौरा के राष्ट्रवादी विचारो के साए मे इस प्रकार जीवित है कि उसके सभी कार्यो तथा प्रतिक्रियाओं को गौरा द्वारा वर्णित राष्ट्रवाद नियंत्रित करता है परन्तु जैसे-जैसे उपन्यास के अंत तक जाते है तो पता चलता है कि विनय धीरे-धीरे स्वयं को परेश बाबू के परिवार के विचारो के अधिक समीप महसुस करने लगता है। जोकि वास्तव मे एक ऐसा परिवार है जो राष्ट्रवाद के उदारवादी पक्ष मे अधिक विश्वास रखता है परन्तु यह उदारवादी गौर का जहां तक सवाल है तो उसे तब तक प्रभावित नही कर पाती जब तक वह अपनी हिन्दू जाति की सर्वोच्चता से मुक्त नही होता अर्थात इस उपन्यास मे टैगोर द्वारा कई सन्दर्भो में यह दर्शाया गया कि धर्म तथा जाति किस प्रकार विभिन्न आयामो मे ''उग्र-राष्ट्रवाद के सिद्धांत'' को प्रेरित करती है। जिसमे

एम ए (इतिहास),यू जी सी-नेट /जे आर एफ, दिल्ली विश्वविद्यालय